४३: समाज में पूर्णता-१

दिनांक -१६/१२/२०११

सर्वतोमुखी समाधान हर व्यक्ति में होना है | यह व्यक्तिवादी, समुदायवादी विधि से असफल हो चुकी है | व्यक्तिवाद, समुदायवाद भ्रम और अपराधों का सूत्र है, व्याख्या है, आचरण है | इसका विकल्प में चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव है | चेतना विकास मूलतः समझदारी के आधार पर है | समझदारी, सहअस्तित्व को समझना है | समझने का मतलब जी पाना है | सहअस्तित्व में जीने की स्थिति में हर मानव समाधान सम्पन्न रहता ही है | इसे भली प्रकार से जी कर देखा है | भ्रम-मुक्ति, अपराध-मुक्ति का सूत्र यही है | समाधान, समृद्धि सम्पन्न होना, इसके लिये विकल्प रूप में चेतना विकास मूल्य शिक्षा का एकमात्र प्रस्ताव है अभी तक | इस प्रस्ताव के अनुसार मानव को सह-अस्तित्व में अनुभव करना ही पड़ेगा | दूसरे भाषा में सहअस्तित्व में पारंगत होना ही पड़ेगा | अनुभव करना, पारंगत होना दोनों का मतलब एक ही है | सह-अस्तित्व विधि से जीने पर पारंगत होने का प्रमाण होता है | शिक्षा विधि से पारंगत होना स्वाभाविक है | शिक्षा का लोकव्यापीकरण होना आवश्यक है | हर मानव में सच्चाई स्वीकारने का चाहत है ही | सच्चाई केवल सह–अस्तित्व ही है | आलेख में यह लिखा है | सह-अस्तित्व ही परम सत्य है | इसके पहले आदर्शवादियों ने सच्चाई के प्रति जिज्ञासा किया है | उनके अनुसार सच्चाई ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या है जबकि ब्रह्म से जीव जगत पैदा है, यह बताया है |

इसी वितंडावाद का उपाय रूप में विकल्प आया है | विकल्प विधि से सहअस्तित्व को समझने का व्यवस्था है | सहअस्तित्व मूल रूप में सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति है | प्रकृति ही पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था और ज्ञानावस्था में गण्य है | मानव ज्ञानावस्था में गण्य है | ज्ञानावस्था में मानव होते हुए, जीव चेतना को अपनाते हुए, जीवों से अच्छा जीने में सफल हुआ | जीव चेतना क्रम में जीने पर व्यक्तिवाद, समुदायवाद अंतिम निष्कर्ष है | इस क्रम में हर मनुष्य समस्या से ग्रसित होना स्वाभाविक रहा | समस्याएं सभी अवैध बात को वैध मानने के लिये मजबूर करता है | इसी काम में मानव लाभोन्मादी, भोगोन्मादी, कामोन्मादी शिक्षा को वैध माना है और सीमा सुरक्षा विधा में सभी अवैध बात को वैध माना है | ये दोनों घटना क्रम होते हुए कौन स्वस्थ आदमी होगा, इसको सोचना आवश्यक है | अवैध बात को वैध मानते हुए आदमी कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रतवश विकल्प विधि को सोच, समझ सकता है | समझकर प्रमाणित हो सकता है | प्रमाणित होने पर यही जागृत मानव परम्परा है | जागृत मानव परम्परा में ही अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सार्थक होता है | नाम तो पहले से ही है जो सभी समुदायों में अखण्डता, सार्वभौमता कहा जा रहा है | इससे बड़ा विडंबना और क्या होगा? इससे मुक्त होने के लिये भ्रम-मुक्ति, अपराध-मुक्ति ही है | इसका सूत्र विकसित चेतना विधि से ही मानव जात मानवत्व को प्रमाणित कर पाता है, देवत्व को प्रमाणित कर पाता है, दिव्यत्व को प्रमाणित कर पाता है | मानव ही इन तीनों स्थितियों में प्रमाण होना होता है | यही मानव का विकास है न कि केवल पैसा | कागज रुपी पैसा का कहीं तृप्ति बिंदु नहीं है | वस्तु रुपी अर्थ का तृप्ति बिंदु होता है | इसे भली प्रकार देखा गया है, समझा गया है, प्रमाणित किया गया है |

उक्त प्रकार से मानव ही जागृति व भ्रम का आधार है | दूसरी भाषा में जागृति व भ्रम का धारक, वाहक है | भ्रम विधि से शिकायतें ढेर हो जाती हैं व समाधान होता नहीं | जागृति विधि से समाधान ढेर हो जाते हैं, व शिकायतें नष्ट या समाप्त हो जाते हैं | जागृत मानव का आचरण सम्बंधी बात व मानसिकता, विकसित चेतना विधि से सम्पन्न होता है |

मानसिकता का स्वरूप में अनुभवमूलक, विचारमूलक, व्यवहारमूलक पद्धति ही रहती है | अनुभवमूलक विधि से समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में प्रमाण होता है | अनुभव प्रमाण ही प्रधान है | सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण का मतलब, चारों अवस्थाओं में संतुलन विधि से जी पाने से ही है | संतुलन का मतलब उत्पादन कार्य में स्रोत को यथावत बनाये रखते हुए धरती में पाये जाने वाले खनिज व वनस्पति को बचाए रखते हुए अपने सम्पादन कार्य को कर पाना | इसे अच्छी प्रकार से समझ सकते हैं | इस प्रकार जीने से धरती में संतुलन बना रहता है | अभी तक जो कुछ बरबाद हो गया है उसका कौन जिम्मेदार है? इसका उत्तर यही है कि अभी तक धरती पर मानव ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी के रूप में है | यही तीनों प्रकार के मानव ही अथवा प्रजाति के मानव ही जिम्मेदार हैं | यही तीनों प्रकार के मानव यथास्थिति को घटित किया है | परिणामतः धरती बीमार होना, यथा धरती तापग्रस्त होना, प्रदूषण छा जाना, अनेक रोग राटा से घिर जाना हो चुका है | इन सभी बातों से यही निष्कर्ष निकलता है कि मानव अपने किये अपकृत्यों को त्याग देना ही बनता है | क्या पाने से त्यागना होता है यही मुख्य बात है | जागृत चेतना रुपी सच्चाई को समझना ही होगा | इसे आचरण में लाना ही होगा तभी जीना होगा | इन बातों पर बल देते हुए मध्यस्थ दर्शन, वाद, शास्त्र प्रस्तुत है | सह-अस्तित्ववाद के अनुसार लाभोन्मादी अर्थशास्त्र के विकल्प में आवर्तनशील अर्थशास्त्र प्रस्तुत किया है | भोगोन्मादी समाजशास्त्र के विकल्प में व्यवहारवादी समाजशास्त्र प्रस्तुत किया है | व्यवहारवाद का मूल सूत्र अनुभव प्रमाण, विचार प्रमाण, व्यवहार प्रमाण ही है | व्यवहार-कार्य प्रमाण में ही विचार और अनुभव प्रमाणित हो पाते हैं | इन्हें भली प्रकार से परीक्षण किया है | सार संक्षेप यही है कि मानव को भ्रमपूर्वक जीना है या जागृतिपूर्वक? भ्रम को ही जागृति माना जाय या जागृति को ही जागृति माना जाय? जैसा समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज अनुभव प्रमाण वैध होगा या सुविधा संग्रह प्रवृत्ति वैध होगा, जिसमें तृप्ति बिंदु नहीं बनती? यह सोचने में आता है | सुविधा- संग्रह प्रलोभनवश मानव अपनाया है | यह तृप्ति बिंदु न होने के आधार पर पुनर्विचार की आवश्यकता बनी है | दूसरा सुविधा- संग्रह के आधार पर जितने भी अपकृत्यों को मानव अपनाया है, प्रधान रूप में शिक्षा विधि, सीमा सुरक्षा विधा में, इन पर पुनर्विचार की आवश्यकता है |

मानव अखण्ड समाज के रूप में होने पर मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद के अनुसार विकसित चेतना विधि से ही मानव जात अपकृत्यों से मुक्त हो सकता है | भ्रम से मुक्त होने का ही गवाही अपराधों से मुक्ति और न्याय, समाधान सत्यपूर्वक जीने की विधि है | यह चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से सर्मानव को सुलभ होने की व्यवस्था है | इस क्रम में मानव अखण्ड समाज रूप में जी पाना सहज है | अखण्ड समाज का तात्पर्य मानव जात सर्व देशकाल में एक जाति, एक धर्म के रूप में जीने से ही है | यह विकसित चेतना विधि से मानव को करतलगत है |

सर्वशुभ हो! जय हो ! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक - मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला-अनूपपुर (म. प्र.)